अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2021) दिनांक : 18.12.2021

समय सीमा : 3 घंटा चतुर्थ वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

लघु दण्डक–30

प्र. 1 कोई चार द्वार लिखें– 24

(क) गति-अगति द्वार-तेजसकाय से प्रारम्भ करते हुए अंत तक लिखें।

(ख) उपयोग द्वार।

(ग) च्यवन द्वार।

(घ) प्राण द्वार।

(ङ) समुद्घात द्वार

(च) स्थिति द्वार–ज्योतिष देवों की स्थिति।

प्र. 2 कोई दो द्वार लिखें– 6

(क) दर्शन द्वार।

(ख) ज्ञान द्वार।

(ग) आहार द्वार।

पांच ज्ञान–30

प्र. 3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 24

(क) अवधिज्ञान के विषय को विवेचित कीजिए।

(ख) संज्ञी श्रुत एवं असंज्ञी श्रुत के तीनों प्रकारों का वर्णन करें।

(ग) मनःपर्यव ज्ञान को प्रारंभ से लिखते हुए इसके दो भेदों के बारे में तक लिखें।

(घ) आनुगमिक अवधिज्ञान के दोनों प्रकारों का विवेचन करें।

(ङ) केवलज्ञान–सिद्ध केवल ज्ञान के प्रकार से प्रारम्भ करते हुए स्त्रीलिंग सिद्ध के पहले तक लिखें।

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) धारणा का कालमान कितना है?

(ख) कौन सा श्रुत अन्तसहित है?

(ग) मतिज्ञान के अवग्रह आदि कितने भेद हैं?

(घ) पांच ज्ञान में कौन सा ज्ञान क्षय और क्षयोपशम से प्राप्त होते है?

(ङ) कार्मिकी बुद्धि किसे कहते हैं?

(च) क्षायोपशमिक अवधिज्ञान किनके होता है?

(छ) संज्ञी तिर्यंच अवधिज्ञान के द्वारा जघन्य व उत्कृष्ट कितना देखता है?

(ज) मनःपर्यव ज्ञान ऋद्धि प्राप्त के होता है, इसका क्या तात्पर्य है?

गीतिका (गुणस्थान दिग्दर्शन)–10

प्र. 5 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) ईर्यापथिक बंध का कालमान कितना है? और उसका बंध किन-किन गुणस्थानों में होता है।

(ख) मोह कर्म का क्षायक निष्पन्न व चार अघात्य कर्मों का क्षायक निष्पन्न भाव कहां पाया जाता है?

(ग) चार घाति कर्म किन गुणस्थानों के किन-किन समयों में क्षीण होते हैं?

प्र. 6 किन्हीं दो पद्य अर्थ सहित लिखें– 8

(क) मोह तणी.....मझारो रे।

(ख) ज्ञानावरणी.....उपनो रे।

(ग) आयु.....कहीजे रे।

(घ) मोह नो.....तामो रे।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–30

प्र. 7 निम्न सभी प्रश्नों के उत्तर दें– 30

(क) पच्चीस बोल–पाप तत्त्व का तेरहवां भेद ***अथवा*** आठवां दण्डक। 1

(ख) चतुर्भंगी–बीसवां बोल ***अथवा*** पन्द्रहवां बोल। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–पांचवा बोल ***अथवा*** प्रथम छह गुणस्थान। 3

(घ) तत्त्वचर्चा–छह द्रव्यों में रूपी अरूपी ***अथवा*** धर्म पर चर्चा। 3

(ङ) प्रतिक्रमण–प्रतिक्रमण प्रतिज्ञा ***अथवा*** सामायिक व्रत के अतिचार। 2

(च) कर्म प्रकृति–नौ कषाय की नौ प्रकृतियों के बारे में ***अथवा*** पिंड प्रकृति 2,3,5,6 के बारे में वर्णन करें। 4

(छ) जैन तत्त्व प्रवेश–(प्रथम खण्ड) दृष्टांत द्वार से पुण्य पाप का वर्णन करें ***अथवा*** द्रव्य गुण पर्याय द्वार से सामान्य गुणों की व्याख्या करें। 3

(ज) बावन बोल–जीव पारिणामिक के दस भेद, कितने भाव? कितनी आत्मा ***अथवा*** चौदह गुणस्थान कितने भाव? कितनी आत्मा आरम्भ से बारहवें गुणस्थान तक लिखें। 4

(झ) इक्कीस द्वार–क्षायिक सम्यक्त्वी ***अथवा*** अभवी। 4

(ञ) जैन तत्त्व प्रवेश–(द्वितीय व तृतीय खण्ड)उपासक प्रतिमा द्वार-उद्विष्ट वर्जक व श्रमण भूत प्रतिमा के विषय में लिखें ***अथवा*** सप्तभंगी लिखें। 3